कविता

आने वाला खतरा

इस लज्जित और पराजित युग में
कहीं से ले आओ वह दिमाग
जो खुशामद आदतन नहीं करता

कहीं से ले आओ निर्धनता
जो अपने बदले में कुछ नहीं मांगती
और उसे एक बार आंख से आंख मिलाने दो

जल्दी कर डालो कि फलने फूलने वाले हैं लोग
औरतें पियेंगी आदमी खायेंगे - रमेश
एक दिन इसी तरह आयेगा - रमेश
कि किसी की कोई राय न रह जायेगी - रमेश
क्रोध होगा पर विरोध न होगा
अर्जियों के सिवाय - रमेश
खतरा होगा खतरे की घंटी होगी
और उसे बादशाह बजायेगा - रमेश

रघुवीर सहाय
('हंसो हंसो जल्दी हंसो' संग्रह से साभार)

कविता

बड़ा हो रहा है

बड़ा हो रहा है लड़का
उन औजारों के बिना
जिनसे वह बनाता और तोड़ता हुआ बड़ा होता
वह सिर्फ बड़ा हो रहा है

रघुवीर सहाय
('हंसो हंसो जल्दी हंसो' संग्रह से साभार।)